International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 3, March 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

धार्मिक क्रांति के रूप में बौद्ध धर्म का उदय

डॉ०ज्योति कुमारी
ग्राम + पोस्ट - गोनौली
अंधराठाढी जिला – मधुबनी (बिहार)

उत्तर वैदिक काल में चतुर्वर्ण व्यवस्था स्थापित हो गई थी| तत्कालीन समाज चार वर्णों में विभाजित था- ब्राह्मण, क्षेत्रीय, वैश्य और शूद्र धर्म सूत्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है| कि इस काल में वर्ण जातियों में परिवर्तित होने लगे थे|अन्य व्यक्ति का वर्ण साधारणतया उसके जन्म के आधार पर निर्धारित किया जाता था| पुरोहितों ने अपने आप को श्रेष्ठ मान लिया था| उसकी शक्ति सर्वोपरि हो गई थी| प्रसिद्ध इतिहासकार 'रोमिला थापर' के अनुसार- " समाज मे ब्राह्मणों को सर्वश्रेष्ठ होने का प्रमुख कारण यह था कि धार्मिक नियमों का निर्धारण वे ही करते थे"|

वर्ण के अंतर का प्रभाव कानून पर भी था |एक ही अपराध के लिए ब्राह्मणों को सबसे कम दंड मिलता था उससे अधिक क्षत्रीय को, उससे अधिक वैश्य को और सबसे कठोर दंड शूद्र को दिया जाता था | अर्थात अपराधी जितने ही नीच वर्ण का होता था सजा उतनी ही कठोर होती थी| इसी तरह संस्कार में भी अलग-अलग व्यवस्थाएं निर्धारित की गई थी| इतना ही नहीं धर्म सूत्रों से विदित होता है कि ब्राह्मण, शुद्र को अस्पृश्य समझते थे और उनके हाथ छुआ भोजन नहीं करते थे| ब्राह्मण और शूद्रों के वैवाहिक संबंध कदाचित होता था तो उसे अत्यंत निंदनीय कार्य समझा जाता था उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था| उच्च जाति के लोग जब इन्हें अपने बर्तनों में भोजन कराते थे तो उस पात्र को अपवित्र मानते थे|

यह स्वाभाविक ही था कि इससे वर्ण-विभाजन वाले समाज में तनाव पैदा होता| निम्न वर्ग के लोग असंतुष्ट थे | क्षत्रीय लोग जो शासक के रूप में काम करते थे, ब्राह्मणों के धर्म विषयक प्रभुत्व पर प्रबल आपत्ति करते थे और लगता है कि उन्होंने वर्ण व्यवस्था को जन्म मूलक मानने के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया था| इस प्रकार विशेषाधिकारों का दावा करने वाले पुरोहितों या ब्राह्मणों की श्रेष्ठता के विरुद्ध क्षत्रियों का खड़ा होना बौद्ध धर्म के उद्भव का एक कारण हुआ|बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध क्षत्रिय थे और उन्होंने ब्राह्मणों की मान्यता को चुनौती दी | महात्मा बुद्ध जाति के समर्थक नहीं थे | वे कर्म को प्रधान मानते थे | जैन ग्रंथों में भी ब्राह्मणों के प्रति असम्मान प्रदर्शित किया गया है !

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में छठी शताब्दी ई. पूर्व को एक महत्वपूर्ण मंजिल माना जाता है | प्राचीन वैदिक धर्म का जीवित शक्ति के रूप में धीरे धीरे ह्रास हो चुका था और उपनिषदों ने जीवन के मूलभूत प्रश्नों पर चिंतन स्वतंत्रता की आवाज उठाई थी यथास्थिति से असंतोष, जीवन में दुख और चिंताओं के संबंध में विचार, मुक्ति के नए उपाय ढूंढने की आंतरिक इच्छा और ध्रुवसत्य की खोज की उत्कट अभिलाषा लोगों के मन में जाग उठी थी | इस प्रकार के विचार आम घटना बन गए थे | फल स्वरुप नए विचारों और दर्शनिक सिद्धांतों का एक बवंडर उठ खड़ा हुआ जिसके साथ ही अनेक धार्मिक संप्रदायों ने जन्म लिया |

इस युग की विचारधाराओं के प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष परिणामस्वरूप विभिन्न धार्मिक संप्रदाय का उद्भव और विकास हुआ जिसका भारत के धार्मिक इतिहास पर स्थायी प्रभाव पड़ा। रूढ़िवादी परंपरा का विरोध किया है। सामाजिक और आर्थिक जीवन के बदलते हुए रूप जैसे नगरों का विकास , शिल्पी समुदायों का विस्तार, व्यवसाय और वाणिज्य की द्रुत प्रगति, धर्म और चिंतन में होने वाले परिवर्तनों से धनिष्ठ रूप से संबंध थे।बौद्ध धर्म के विकास में लिपि का भी योगदान रहा एक लिपि का प्रयोग जिसका प्रचार बढ़ते हुए व्यापार के कारण हुआ छठी शताब्दी में लेखन का उदाहरण उपलब्ध नहीं है , किंतु इस काल के साहित्यिक स्रोतों में वर्णमाला के प्रयोग की चर्चा सामान्य रूप से बार-बार मिलती है। लगभग इस समय संस्कृत से विभिन्न भाषाएं विकसित होने लगी थी। परिनिष्ठित संस्कृत धीरे-धीरे और उत्तरोत्तर ब्राह्मणों की तथा श्रेष्ठ वर्णों की भाषा बनती जा रही थी अर्थात उसका प्रयोग राजकीय घोषणाओ सरकारी कागजातों, एंव वैदिक अनुष्ठानों और कर्मकांड तक ही सीमित था! महात्मा बुद्ध ने साधारण जनता की भाषा 'पालि' में अपने उपदेश दिए। बुद्ध ने व्यवहारिक दर्शन की कोशिश की उनके अनुसार -सृष्टि दुखमय , क्षणिक एंव आत्माविहीन है! इन्होने आत्मा की सत्ता को अस्वीकार कर दिया तथा कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास प्रकट किया। बौद्ध दर्शन के अनुसार जिसे हम एक व्यक्ति के रूप में देखते हैं वस्तुत: वह भौतिक तथा मानसिक तत्वों के पाँच स्कन्धों से निर्मित है— 1.रूप 2.संज्ञा 3.वेदना 4.विज्ञान एंव 5.संस्कार वैदिक काल के अंतिम दौड़ में पुरोहितों के प्रभुत्व के विरुद्ध तथा यज्ञ और कर्मकांडों के विरुद्ध प्रबल प्रतिक्रिया हुई। यह प्रतिक्रिया पंचालों और विदेह राज्य में विशेषकर हुई, जहाँ 600 ई ० पू० के आसपास उपनिषदों का संकलन हुआ था इन दार्शनिक ग्रंथों में कर्मकांड की निंदा की गई और यथार्थ विश्वास एंव ज्ञान को महत्व दिया गया। महात्मा बुद्ध और उनके धर्म की लोकप्रियता का भी मुख्य यही कारण था– वैदिक धर्म में कर्मकांड तथा कुरीतियों का आगमन बौद्ध धर्म में कहा गया है कि आत्मज्ञान प्राप्त करना चाहिए और आत्मा के विकल्प में चेतना का संबंध 5 स्कन्ध, 12 आय तथा 18 धातुओं से हैं! बुद्ध ने विश्व को दुखमय जानकार दुख के कारण का विश्लेषण दूसरे आर्य सत्य में जिस सिद्धांत के आधार पर किया गया। उसे प्रतीत्यसमुत्पाद कहते हैं प्रतीत्य का अर्थ है–आश्रित या निर्भर रहकर एंव समुत्पाद का अर्थ है उत्पत्ति इस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पाद के विरुद्ध बौद्ध धर्म में कार्य कारण का सिद्धांत है कार्य कारण रूप की व्यवस्था द्वादश अंग के आधार पर की जाती है! ये द्वादश अंग है– 1.अविद्दया 2.संस्कार 3.विज्ञान 4.नामरूप 5.षडायतन 6.स्पर्श 7.वेदना 8.तृष्णा 9.उपादान 10.भव 11. जाति और 12.जरा मरण इस प्रकार बौद्ध धर्म ईश्वर और आत्मा को नहीं मानता है इस बात को हम भारत के धर्मों के इतिहास में क्रांति कह सकते हैं बौद्ध धर्म शुरू में जातिवादिता एवं वाद विवाद के जंजाल में फंसा नहीं था इसलिए यह सामान्य लोगों को भाया यह विशेष रूप से स्त्रियों एंव निम्नवर्णों का समर्थन पा सका क्योंकि इसमें वर्ण व्यवस्था की निंदा की गई है बौद्ध संध का दरवाजा हर किसी के लिए खुला रहता था चाहे वह किसी भी जाति का क्यों न हो। संध में प्रवेश का अधिकार स्त्रियों को भी था, जिससे उन्हें पुरुषों की बराबरी प्राप्त होती थी। ब्राह्मण धर्म की तुलना में बौद्ध धर्म अधिक उदार और अधिक जनतांत्रिक था

बौद्ध धर्म महात्मा बुद्ध के जीवन काल में ही अत्यधिक लोकप्रिय धर्म बन गया था! उन्होंने अपने 45 वर्षों के साधक जीवन में घूम घूम कर लोगों को उपदेश दिए तथा अपने जीवन सिद्धांतों से परिचय कराया। बौध्द धर्म वैदिक क्षेत्र से बाहर के लोगों को अधिक भाया और वे लोग आसानी से इस धर्म में दीक्षित हुए और मगध के निवासी इस धर्म की ओर तुरंत उन्मुख हुए क्योंकि कट्टर ब्राह्मण उन्हें नीच मानते एंव हेय दृष्टि देखते थे मगध आर्यों की पुण्य भूमि आर्यावर्त अर्थात आधुनिक उत्तर प्रदेश

की सीमा के बाहर पड़ता था अभी भी उत्तर बिहार के लोग गंगा के दक्षिण मगध में वैवाहिक संबंध स्थापित करना पसंद नहीं करते | बौद्ध धर्म ने स्त्रियों और शूद्रों के लिए अपने द्वार खोलकर समाज पर गहरा प्रभाव जमाया | ब्राह्मण धर्म ने स्त्रियों और शुद्रों को एक ही दर्जे में रखा उनके लिए न यज्ञोपवीत संस्कार का विधान किया और न वेदाध्ययन का बौद्ध धर्म ग्रहण करने पर उसे इस अधिकार हीनता से मुक्ति मिल गई |

बुद्ध के व्यक्तित्व और धर्मोपदेश की प्रणाली दोनों ही बौद्ध धर्म के प्रचार में सहायक हुए! मैं भलाई करके बुराई को भगाने तथा प्रेम करके घृणा को भगाने का प्रयास करते थे | निंदा और गाली से उन्हें क्रोध नहीं आता था | कठिन परिस्थितियों में भी वे धीर और शांत बने रहते थे अपने विरोधियों का सामना चातुर्य और प्रप्युत्पन्नमति से करते थे |

बौद्ध धर्म ने बौद्धिक एंव साहित्यिक जगत में भी चेतना का अलख जगाया इसनें लोगों को जागरुक किया कि किसी वस्तु को यों ही नहीं बल्कि भली-भांति गुण दोष का विवेचन करके ग्रहण करें | बहुत हद तक अंधविश्वास का स्थान तर्क नें ले लिया | इससे लोगों में अंधविश्वास के बदले बुद्धिवाद पनपा | अपने नए धर्म के सिद्धांतों का प्रतिपादन करने के लिए बौध्दों नें नए प्रकार की साहित्य का सृजन किया | इस धर्म में अहिंसा और जीव मात्र के प्रति दया की भावना जगाकर देश में पशुधन वृद्धि की | प्राचीनतम बौद्ध ग्रंथ सुतनियात में गाय को अन्नदा ,वन्नदा और सुखदा कहा गया है और इस कारण उसकी रक्षा का उपदेश दिया गया है यह उपदेश एन मौके पर आय जब आर्येतर लोग माँस के लिए और आर्य लोग धर्म के लिए पशुधन का संहार करते जा रहे थे बौद्ध धर्म के उपदेशों के प्रभाव के कारण ही ब्राह्मण धर्म में गाय की पूजनीयता और अहिंसा पर जोर पढ़ने लगा वैदिक और प्रारंभिक हिंदू धर्मों में आहार के रूप में माँस को ग्रहण किया जाता था बौद्ध धर्म में मांसाहार निषेध है इसके प्रभाव से अधिकांश लोग शाकाहारी हो गए विदेशों में बौद्ध धर्म के प्रभाव से हिंसा का परित्याग किया गया और निरामिष आहार को अपेक्षाकृत उत्तम माना गया !

भारत और भारत के बाहर दूसरे देशों में अहिंसा और दया की भावना का प्रसार बौद्ध धर्म के ही माध्यम से ही हुआ था! विश्व के प्राणिमात्र में करुणा की भावना को बौद्ध धर्म ने ही जागृत किया था! बौद्ध धर्म ने अपनी अहिंसा और प्राणियों के प्रति दया भावना से बड़े-बड़े शासकों को प्रभावित कर उनकी राजनीतिक प्रसारवादी महत्वाकांक्षा को अवरुद्ध किया तथा उनके संपूर्ण जीवन को ही परिवर्तित कर दिया इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण महान मौर्य सम्राट अशोक के मन मास्तिष्क को इस धर्म ने पूर्णत: परिवर्तित कर दिया तथा उसे साम्राज्यवादी क्रियाओं से विमुख कर अहिंसात्मक और करुणा जनित कार्यों की ओर संलग्न किया! यह बौद्ध धर्म का ही प्रभाव था कि अशोक जैसे महान सम्राट ने युद्ध और संघर्ष के मार्ग को सर्वदा के लिए त्याग कर अहिंसा और शांति को अपनाया! उसके बाद अनेक सम्राटों ने बौध्द धर्म की अहिंसा और दया की शिक्षा का अनुशरण किया |

भारतीय स्थापत्य और वास्तु कला पर बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण प्रभाव है अनेकानेक बौध्द बिहारो , संघारामों ,स्तूपों और चैत्यों का निर्माण समय समय पर होता रहा, जिससे संस्कृति भारतीय समृद्ध और उन्नत होती होती रही | यही नहीं, बौद्ध धर्म से संबंधित अशोक जैसे सम्राटों ने विशालकाय ' प्रस्तर–स्तंभो का निर्माण करवाया जो भारतीयकला की अमूल्य निधि है बुध्द और बोधिसत्वों की भी अनेक प्रकार की मूर्तियों बनी , जो तत्कालीन शैली की विशेषता व्यक्त करती है अजंता जैसे अनेक गुहाएँ निर्मित की गई जिनकी दीवारों पर विविध प्रकार के रंग-बिरंगे चित्रों को सजीवता के साथ

उफेरा गया है!

बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत का सांस्कृतिक संबंध विभिन्न देशों से स्थापित हुआ! भारत के बौध्द मिक्षुओंने तीसरी सदी ई० पू० से विदेशों में जाकर बौद्ध धर्म और सिद्धांतों का प्रचार किया! स्वयं अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संधमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा था! यही नहीं उसके युग में अनेक बौद्ध धर्म के प्रचारक तिब्बत, चीन और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में गए | पश्चिम में यूनान आदि देशों में भी अशोक के प्रतिनिधि भेजे गए थे | इस प्रकार मौर्य युग और उसके बाद से विभिन्न देशों में बौद्ध धर्म प्रचारकों ने जाकर बौद्ध धर्म और ज्ञान की ज्योति जलाई | परिणाम यह हुआ कि विदेशों से बौद्ध धर्म अनुयायियों का भारत आना प्रारंभ हो गया | उनके भारत आने का उद्देश्य था बौद्ध धर्म के तीर्थ स्थानों की यात्रा करना और तत्संबंधी साहित्य संकलित करना | इस प्रकार धर्म के माध्यम से भारत का सांस्कृतिक आदान प्रदान दूसरे देशों से स्थापित हुआ | कुछ देशों में इस धर्म का इतना प्रभाव पड़ा कि पूरा पूरा देश बौद्ध धर्मावलंबी हो गया | ऐसे देशों में श्रीलंका, चीन ,तिब्बत,वर्मा, जापान आदि प्रमुख हैं वस्तुतः यह बौद्ध धर्म की मूर्तिमान देन हीं थी कि भारतीय धर्म एवं संस्कृति को विश्व के विभिन्न देशों ने अपनाया |

संदर्भ सूची:-

1.प्राचीन भारत :- रमेश चंद्र मजूमदार

2. प्रारंभिक भारत का परिचय :- रामशरण शर्मा

3.भारत का इतिहास :- रोमिला थापर

4.प्राचीन भारत :- न.सी.ई.आर.टी

5.बुद्धिस्ट इंडिया :- टी.डब्ल्यू.रेज डेविस (1903)

6.प्राचीन भारत का इतिहास :- डी.एन.झा